International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.4 Mar – Apr 2023

बदलाव के बीच हिंदी : अतीत और वर्तमान

दिव्या पाठक

सहायक प्राध्यापक,हिंदी स्वर्गीय चन्द्र सिंह शाही राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपकोट

***Corresponding Author*- दिव्या पाठक**

Email- divyaa.paathak@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7966132

प्रत्येक भाषा का अपना समाजशास्त्र होता है। भाषा समाज में पैदा होती वहीं विकसित होती है। बदलते सामाजिक मूल्य भाषा के बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हर समाज के अपने मूल्य होते हैं। भाषा के विकास में इन मूल्यों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सामाजिक मूल्य भाषा के बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भाषा को मानव की वह जरूरत कहा जा सकता है जिसके जिसके बिना उसका प्रगति कर पाना असंभव लगता है। भाषा समाज में जन्म लेती है और धीरे-धीरे अपने समय की विविध परिस्थितियों से प्रभाव ग्रहण करती हुई विकास की ओर अग्रसर होती है। भाषा के विकास में मनुष्य का परिवेश अहम भूमिका निभाता है। किसी भी भाषा के बदलते स्वरूप को समझने के लिये तत्कालीन ऐतिहासिक परिवेश को समझना आवश्यक है। मौजूदा समय में विश्व में अनेक भाषाएं हैं। इन अनेक भाषाओं के बीच हिन्दी बदले हुये स्वरूप के साथ लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हुई है और बदलते समाज की जरूरतों के हिसाब से नये अर्थों में प्रयोग में लाई जा रही है। अपने अस्तित्वकाल से लेकर अद्यतन हिन्दी भिन्न-भिन्न पड़ावों से होकर गुजरी है और अनेक पड़ावों को पार करती हुई हिन्दी आज वैश्विक स्तर की भाषा बनने की ओर अग्रसर है। ये पड़ाव तमाम अन्तर्विरोधों, भाषाई प्रभावों व भेदभाव से युक्त रहे हैं।

अपभ्रंश की उंगली थामे आठवीं शताब्दी के आसपास हिंदी के अस्तित्व में आने के प्रमाण मिलते हैं। तत्कालीन साहित्य इस बात की पुष्टि करता है। इस दौरान अपभ्रंश के कवि जनभाषा में रचना करने की ओर प्रवृत्त हुए। हालांकि आरंभिक दौर में भाषागत प्रवृत्तियां स्पष्ट रूप से तो दृष्टिगत नहीं होती हैं लेकिन हिंदी के बीज इस दौर के साहित्य में अवश्य नज़र आने लगे थे। लेकिन चौदहवीं शताब्दी के बाद से ही हिंदी पूर्णतः अपने पैरों पर खड़ी हो गयी और विकास की ओर अग्रसर है।

चौदहवीं शताब्दी यानि मध्यकाल से हिंदी में बदलाव की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी थी। ये वो समय था जब मध्यदेश राजनीतिक अस्थिरता एवं अशांति के दौर से गुज़र रहा था। भारत के इतिहास पर नज़र डालें तो समय असमय यहाँ विविध जातियों के आक्रमण होते रहे। इन जातियों ने किसी न किसी रूप में अपना प्रभाव छोड़ा है। भाषा के स्तर पर भी ये प्रभाव दिखाई पड़ता है। "भारत में आर्यों के प्रतिष्ठापित हो जाने के बाद और प्राकृत-युग के आरम्भ में हखामनीश(एकेमेनीय), ग्रीक, शक आदि भारत आये और एक ओर जहाँ वे भारतीय संस्कृति और भाषा से प्रभावित हुए, वहीं दूसरी ओर उन्होंने स्वयं भी यहाँ की भाषा को प्रभावित किया। ईसा के जन्म से तीन-शताब्दी बाद, जब गुप्तकाल में भारत का ईरान से विशेष सम्बन्ध स्थापित हुआ तब पारस्परिक आदान-प्रदान के फलस्वरूप कतिपय शब्द ईरानी से संस्कृत में स्वीकृत हुए। आगे चलकर जब तुर्कों ने भारत को अधीन किया, तब कतिपय तुर्की शब्द हिंदी में आये। आज भी हिंदी में निम्नलिखित तुर्की शब्द प्रचलित हैं : उर्दु>उर्दू (किला, बाद में उर्दू की ज़बान), आका(मालिक), कलगी, कैंची, काबू, गलीचा, चाकू, दरोगा, बीबी, लाश, सौगात आदि। तुर्कों की विजय के पश्चात् उनसे सम्बन्ध रखने वाले कतिपय हिन्दुओं ने भी फारसी पढ़ना प्रारंम्भ किया; किन्तु इसका विशेष प्रभाव उत्तरी-भारत की भाषाओं पर न पड़ा, क्यूंकि शासन सम्बन्धी कार्य हिंदी, पंजाबी, गुजराती तथा बंगला के माध्यम से चलता रहा। किन्तु सोलहवीं शताब्दी के मध्य भाग में मुग़ल शासन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। देशी भाषाओं का स्थान फारसी को मिला और सरकारी हिसाब और कागज़-पत्र फारसी में रखे जाने लगे। इसका तात्कालिक परिणाम यह हुआ कचहरी से सम्बन्ध रखने वाले अमला लोग प्रत्येक प्रदेश में फारसी से परिचित होने लगे। हिंदी के आदमी, औरत, बच्चा, हवा, आसमान, ज़मीन, आहिस्ता, देर, मालूम, नज़दीक, सब्र, कसूर, शर्म, हिसाब-किताब, सिपाही, फौज, मौज, मज़ा, ,मुर्दा, गुस्सा जैसे आधुनिक जीवन के शब्द भी फारसी के हैं।"[i] आज भी हिंदी में इन शब्दों का धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा है। आम बोलचाल की भाषा में ये इस तरह घुलमिल गए हैं कि कहीं से कहीं तक इनके विदेशी होने का आभास नहीं होता है। हिंदी के उद्भव काल से ही ऐसे कई भाषाओं के शब्द हिंदी से घुल-मिल गए। इन शब्दों का इस तरह हिंदी में मिल जाना भाषा की समाहार शक्ति को दर्शाता है। इन भाषाओं के आपस में घुलमिल जाने का एक मुख्य कारण व्यापार भी रहा है। "सोलहवीं-सत्रहवीं सदियों के उत्तर भारत के बिखरे हुए बाजार एक दूसरे से सम्बद्ध हुए। योरोप के व्यापारी अवध का बना हुआ कपड़ा आगरे में खरीदते थे। योरोपीय यात्रियों के अनुसार सत्रहवीं सदी में आगरे की आबादी छह लाख थी। पेलसार्ट के लिखा था कि गुजरात,

सिंध, लाहौर, दकन हर तरफ का माल आगरे से गुजरता है; सड़कों पर बेशुमार माल- खासकर सूती माल -ढोया जाता है। पटना, बनारस, लखनऊ –ये सभी शहर सूती कपड़े के व्यापार-केंद्र थे। इनमें आपस के व्यवहार के लिए किसी सामान्य भाषा की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता को पूरा किया व्यापारी वर्ग से सम्बद्ध खड़ी बोली ने.''[ii] आधुनिक काल से पूर्व हिंदी का जितना भी साहित्य है वो हिंदी के अंतर्गत शामिल अलग-अलग बोलियों में है। इनमें से कई बोलियाँ स्वतंत्र भाषा बनने की ओर अग्रसर हैं या बन चुकी हैं। इन बोलियों को हिंदी से अलग भाषा का दर्ज़ा दिए जाने की मांग समय-समय पर उठती रहती है। ऐसे में हिंदी अपने संकुचित अर्थ में खड़ी बोली के रूप में सामने आती है। भाषा का यही संकुचित रूप अपने विस्तृत रूप धारण कर विकास की ओर बढ़ रहा है। अभी जो हिंदी प्रचलन में है या कहें कि मुख्यधारा की भाषा है वह खड़ीबोली का ही एक विकसित रूप है। आधुनिक काल का सम्पूर्ण साहित्य खड़ीबोली हिंदी के विकास को दिखाता है।

<u>हिंदी का बदलता स्वरुप</u>

समय के साथ भाषाएँ बदलती हैं, कभी संस्कृति या फैशन में परिवर्तन से, तो कभी अन्य भाषाओं के संपर्क में आने से। लेकिन भाषा का बुनियादी ढाँचा और अभिव्यक्ति की क्षमता बरकरार रहती है। "इतिहास के चक्र में भाषाएं लगातार एक-दूसरे में घुसपैठ करती रहती हैं। फतह, साम्राज्य, कारोबार, धर्म, टेक्नोलॉजी और आधुनिक काल में वैश्विक मनोरंजन के बरास्ते शब्द फैलते और बिखरते रहते हैं। भाषाओं के बीच मौजूदा संघर्ष जैविक उद्विकास जैसी ही प्रक्रिया है। शब्द भी जीन की तरह अपनी उपयोगिता के अनुसार चलता और टिका रहता है। एक शब्द के जीवित रहने की क्षमता इस बात से तय होती है कि वह किसी नई खोज या पदार्थ के साथ कितनी शिद्दत से जुड़ता है या किसी मनोरंजक या उपयोगी अवधारणा के साथ इस्तेमाल होता है।"[iii]

भारत एक बहुभाषी देश है और यहां संप्रेषण भाषा के रूप में हिन्दी सबसे अधिक प्रयोग में लाई जाती है। इसका मुख्य कारण है कि वक़्त की ज़रूरत के हिसाब से हिंदी ने खुद को बदला। वैश्वीकरण, संचार क्रांति, बाज़ारवाद के हिसाब से हिंदी खुद को ढालने में सफल हुई है। गांवों का देश होने के कारण यहां की आधे से अधिक आबादी गांवों में निवास करती है और बोलचाल के रूप में अपनी क्षेत्रीय बोलियों के अलावा हिन्दी भाषा का इस्तेमाल करती है। रोजमर्रा के संप्रेषण के लिये हिन्दी की जानकारी आम आदमी की जरूरत है। हिन्दी के प्रति लोगों का बढ़ता रुझान और प्रचार-प्रसार उसकी उन्नति एवं सार्थकता का सूचक है। आज से कुछ समय पूर्व तक हिन्दी जनसंपर्क की भाषा के तौर पर जानी जाती थी, परंतु वर्तमान में हिन्दी नित नए रूप गढ़ती हुई बेझिझक आज के व्यक्ति की जरूरतों के अनुरूप कदमताल मिलाकर आगे बढ़ रही है। वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी का आगमन, जनसंचार के माध्यम, बाजारवाद, अंग्रेजी की बढ़ता प्रभाव, लोगों की बदलती मानसिकता आदि कारणों का हिन्दी पर प्रभाव देखा जा सकता है।

हिन्दी को विश्वस्तरीय पहचान एवं विस्तार दिलाने में हिन्दी सिनेमा और संगीत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी फिल्मों और संगीत का अन्तरराष्ट्रीय बाजार लगातार बढ़ा है। पिछले कुछ दशकों में बॉलीवुड की लोकप्रियता विदेशों में इतनी बढ़ गई है कि कई निर्माता विदेशी दर्शकों की रुचिओं को ध्यान में रखकर फिल्में बना रहे हैं।आज दुनिया भर में फैले लगभग तीन करोड़ भारतीयों के लिये हिन्दी फिल्में अपने देश अपनी संस्कृति से जुड़े रहने का सशक्त माध्यम हैं। इसके अलावा विदेशियों के लिये भी सिनेमा और संगीत हिन्दी सीखने का ज्यादा प्रभावी जरिया साबित हुआ है। 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' में हिन्दी पढ़ने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इस बात की पुष्टि की कि हिन्दी फिल्मों और हिन्दी गानों से उन्हें हिन्दी सीखने में मदद मिली।

बदलते परिदृश्य में नज़र डालें तो हिन्दी को एक नया आयाम मिलता दिखाई दे रहा है। बाजार एवं विस्तार के परिणामस्वरूप आज हिन्दी सशक्त एवं कमाऊ भाषा के रूप में उभरी है। रोजगार से लेकर साहित्य तक में इस बदलाव को देखा जा सकता है। इस दौरान हिन्दी के स्वरूप में भी अनेक अप्रत्याशित परिवर्तन आये हैं। इन परिवर्तनों ने अनेक विवादों को जन्म दिया है। दूसरी भाषाओं के शब्द भारी संख्या में हिन्दी में समाहित हुए हैं जिसे हिन्दी ने बेझिझक स्वीकार किया है। उसकी लेखन शैली भी इस प्रभाव से अछूती नहीं रही है। हिंदी वेबसाइट, मोबाइल एप, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल माध्यमों में हिंदी अपना स्थान बनाने में सफल हुई है। इंटरनेट, मोबाइल, व्हाट्स एप, एस.एम.एस., ईमेल और चैटिंग सबसे अधिक उपयोग में लाए जाने वाले ऐसे नूतन मंच हैं जिनमें हिन्दी देवनागरी की जगह रोमन में लिखी जा रही है। इसके अलावा, हिंदी भाषा के समर्थन के लिए विभिन्न टूल भी उपलब्ध हैं, जैसे कि हिंदी इनपुट टूल, ऑनलाइन हिंदी अनुवादक, ऑनलाइन हिंदी स्पेलिंग चेकर, और हिंदी से अन्य भाषाओं में अनुवाद करने वाले टूल। वैश्विक बाज़ार की ज़रूरतों के हिसाब से हिंदी अपनी स्थिति मज़बूत करने की हर-संभव कोशिश कर रही है। इसके चलते हिंदी का स्वरुप काफी बदल चुका है। कह सकते हैं कि आरंभिक काल से लेकर अब तक हिंदी के कई स्वरूप देखने को मिले हैं। हिंदी का लचीलापन उसके लिए बदलाव की नयी राहें खोल रहा है जिनमें कई चुनौतियाँ भी शामिल हैं।

---

[i] तिवारी, उदय नारायण, हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, पृष्ठ 160-161

[ii] शर्मा रामविलास, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 273-274

[iii] शर्मा रामविलास, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 285